देशना जैन

वर्तमान में संचालित पाठशालाओं को कैसे सुचारु एवं सार गर्भित रूप से चलाया जाये →

☆ प्रस्तावना → शिक्षा प्राप्त करने के स्थान को पाठशाला कहते हैं। वास्तव में तो बच्चों की प्रथम पाठशाला उनका घर ही होता है और माता-पिता उनके प्रथम गुरु होते हैं। यद्यपि आज स्वाध्यायी परिवारों में बच्चे घर में ही सुसंस्कारित हो रहे हैं लेकिन आज ज्यादातर घरों का वातावरण बिगड़ चुका है, भौतिकवाद की चकाचौंध से मातृ-पिता स्वयं तो आकर्षित हो ही रहे हैं साथ ही अपने बच्चे को भी वहीं धकेल रहे हैं, इसलिए आज पाठशालाओं की बहुत ज्यादा आवश्यकता है
आज बहुत विद्वानों के निःस्वार्थ सेवा और समर्पण से बहुत पाठशालाएँ प्रारम्भ की गई हैं अब प्रश्न यह है कि उन पाठशालाओं का विकास और अधिक कैसे हो वे सुचारु एवं सार गर्भित रूप से कैसे चलाई जाये ?

(1) पाठशाला के उद्देश्य → पाठशाला खोलने का एक मात्र उद्देश्य बालकों का धार्मिक विकास होना चाहिए क्योंकि किसी नाम बड़ाई या लोभादि के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई पाठशालाएं सफलता प्राप्त नहीं कर पाती जिस प्रयोजन से पाठशाला खोली गई है पूरी शक्ति व धन उसी में खर्च होना चाहिए

(2) पाठशाला पढ़ाने वाले अध्यापक कैसे होने चाहिए ? पूरी पाठशाला की सफलता एक अच्छे अध्यापक पर ही आश्रित है, अब प्रश्न है कि पाठशाला

Scanned with CamScanner

पढ़ाने वाले अध्यापक कैसे होने चाहिए उनमें क्या क्या विशेषतायें होनी चाहिए ?

(3) अध्यापक स्वयं अच्छे स्वाध्यायी होने चाहिए, अध्यापक को जिनधर्म के सिद्धान्त स्पष्ट होने चाहिए, थोड़ा पढ़े हुए अध्यापक पाठशाला अच्छे से नहीं ले पाते बच्चों के बहुत प्रश्न होते हैं यदि अध्यापक उनको सही उत्तर देकर सन्तुष्ट नहीं कर पाये तो बच्चों की दृष्टि में अध्यापक का ज्यादा प्रभाव नहीं रहता महिमा नहीं रहती।

(4) अध्यापक की रोचक शैली → कई जगह पाठशालाओं में देखा जाता है कि पाठशाला अध्यापक की रोचक शैली के अभाव में पाठशालाओं में बच्चे कम होने लगते हैं, आजकल के बच्चे इतनी ज्यादा धर्म रुचि वाले नहीं होते कि उन्हें ज्यादा सैद्धान्तिक और गम्भीरता से पढ़ाया जाये छोटे बच्चों की पाठशाला में पढ़ाने वाले अध्यापकों में रोचक कहानी आदि के माध्यमों से पढ़ाने की योग्यता भी होनी चाहिए।

(5) अध्यापकों का जीवन स्वयं भी आदर्श होना चाहिए अराधक ही सच्चा प्रभावक होता है क्योंकि जिसके जीवन में स्वयं ही आराधना नहीं होगी वह बच्चों को धर्म में कैसे लगायेगा, प्राय आज देखा जा रहा है कि स्वयं अध्यापक जो पाठशालाओं में पढ़ा रहे हैं वे स्वयं ही अभक्ष्य सेवन आदि अनर्गल प्रवृत्ति कर रहे हैं, जिससे

Scanned with CamScanner

अध्यापक का जीवन देखकर बालक भ्रमित हो जाते हैं. अपने अध्यापक की प्रवृत्ति देखकर घर जाकर उनकी बुराई करते हैं उनसे पढ़ना पसन्द नहीं करते, वास्तव में धर्म की पाठशाला पढ़ाने वाले अध्यापक स्वयं कम से कम स्थूल अन्याय, अनीति और अभक्ष्य आदि के तो त्यागी होने ही चाहिए, क्योंकि जो स्वयं ही रात्री भोजन या बाजार भोजन आदि अभक्ष्य सेवन कर रहे हैं, वे बच्चों को भी अभक्ष्य त्याग आदि के बारे में दृढ़ता से पढ़ा ही नहीं पाते या फिर बच्चे भी अध्यापक के अवगुणों को अपनाने लगते हैं कि हमारे अध्यापक भी ऐसा करते हैं तो हम भी वैसा ही करेंगे

(6) अपनी प्रसिद्धि की भावना नहीं होना → आजकल देखा जा रहा है कि विद्वान अध्यापक में अपनी प्रसिद्धि की भावना ज्यादा हो रही है एक से अधिक पाठशाला में अध्यापक होने पर सभी में प्रतिस्पर्धा होने लगती है कि मैं अच्छा पढाता हूँ या मैं अच्छा पढाता हूँ जबकि भावना होनी चाहिए कि बच्चों का जीवन सुखमय कैसे हो उनके अन्दर धर्म संस्कार कैसे उत्पन्न हो, वास्तव में जो धर्म प्रसिद्धि या आत्म प्रसिद्धि की भावना पवित्र हृदय से रखते हैं उनका नाम स्वयं प्रसिद्ध हो ही जाता है।

Scanned with CamScanner

(7) आपस में अध्यापकों में प्रेम व्यवहार → एक से अधिक विद्वान अध्यापक होने पर आपस में प्रेम व्यवहार होना चाहिए सभी को अपने अपने कार्य बाँट लेना चाहिए, मिलजुल कर पाठशाला के सभी कार्य करना चाहिए सबको पढ़ाने का अवसर मिलना चाहिए स्वयं ही सर्वेसर्वा नहीं बनना चाहिए किसी अध्यापक की कोई गलती होने पर बच्चों से या उनके माता-पिता से निन्दा आदि नहीं करना चाहिए, अपितु बच्चों को सभी अध्यापकों की विनय आदि सिखाना चाहिए।

पाठशाला के अध्यापक पाठशाला के लिए पूर्ण समर्पित और निर्वाहक सेवी होने चाहिए, उदार चित्त होने चाहिए।

(8) वर्तमान समय अनुसार पढ़ाने की पद्धति →

यद्यपि पाठशालाओं में बालबोध आदि से तत्वज्ञान आदि तक के कोर्स निश्चित है फिर भी लगातार एक ही क्रम से पढ़ते रहने से बच्चों अरुचि हो जाती है अतः बीच बीच में बच्चों की विशेष कक्षा कुछ हटके रोचक अलग अलग विषयों पर होनी चाहिए।

(9) आधुनिक एवं प्राचीन पद्धति → बच्चों को आधुनिक साधनों जैसे प्रोजेक्ट, चार्ट चित्र आदि माध्यमों से जैन धर्म के सिद्धान्त

समझाना चाहिए किन्तु समय-समय पर अपनी प्राचीन पद्धति चौकी आदि पर विनय पूर्वक पाठशाला पढ़ना भी बताते रहना चाहिए बीच बीच में पढ़ाने में अधिक निपुण अध्यापक बाहर से बुलाने चाहिए। नये नये अध्यापकों को बुलाने से बच्चों को विशेष विशेष रुचि लगती है।

(10) बालसभा → समय समय पर बालसभाओं द्वारा बच्चों से भी पूछना चाहिए कि उनको पाठशाला कैसी लग रही है, वो किस तरह से पढ़ना चाहते हैं बालकों की रुचि अनुसार भी विषय पढ़ाये जाने चाहिए

(11) बालकों के माता पिता के साथ मीटिंग → समयानुसार बच्चों के माता पिता आदि की भी पाठशाला सम्बन्धित मीटिंग होनी चाहिए माता पिता को भी पाठशाला पढ़ने या अपने बालकों को पाठशाला भेजने के प्रति जाग रूप करना चाहिए उन्हें वर्तमान में हो रही विविध घटनाओं आदि के माध्यम से समझना चाहिए कि उच्च स्तर की लौकिक शिक्षा पढ़ने के बाद भी बच्चों का नैतिक पतन किस प्रकार हो रहा है और पाठशाला पढ़ने वाले बच्चों का जीवन कैसा सुन्दर बन जाता है। यदि मीटिंग आदि में माता पिता नहीं आ

Scanned with CamScanner

पाते है तो मोबाइल आदि माध्यमों से उन्हें पाठशाला के लाभ बताये जाये।

(12) वैज्ञानिक और तार्किक शैली मे पढाई →

आजकल बच्चे स्कूल की अंग्रेजी पद्धति से पढ़ने के कारण उन्हें जैन धर्म के सिद्धान्त कल्पना जैसे लगते हैं अतिशयोक्ति लगती है। इसे बच्चों को जिन धर्म के सिद्धान्तो को तर्क आदि से वैज्ञानिक ढंग से पढाये जाने चाहिए। उन्हें जैन धर्म के ग्रन्थों के अलावा इतिहास विज्ञान आदि द्वारा तुलनात्मक स्वाध्याय द्वारा बताना चाहिए कि जैन धर्म कोरी कल्पना नहीं अपितु वस्तु स्वरूप पर आधारित है।

(13) प्रयोगात्मक पद्धति → सैद्धान्तिक कक्षा के साथ-साथ आजकल के बच्चों को प्रयोगात्मक विधि द्वारा पाठशाला मे होने वाले तत्वज्ञान के प्रयोग बताये जाने चाहिए कि अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों मे धर्म के सिद्धान्तो का कैसे प्रयोग करेंगे, गृहकार्य आदि का भार अधिक सैद्धान्तिक न होकर रचनात्मक या प्रयोगात्मक होना चाहिए

आजकल बच्चे चरणानुयोग से बहुत दूर भागते हैं चरणानुयोग के लाभों जैनधर्म के अलावा अन्य जैनेतर ग्रन्थों अथवा स्वास्थ्य

Scanned with CamScanner

आदि की दृष्टि से समझाना चाहिए फिर जैन ग्रन्थों से मिलान कराना चाहिए। चारों अनुयोगों का प्रयोग करते हुए रुचि अनुसार समय-समय पर बदल बदल कर अध्ययन करना चाहिए।

(14) समानता का व्यवहार — सभी बच्चों के साथ समानता का व्यवहार होना चाहिए पाठशाला में समय समय पर पुरस्कार वितरण आदि मात्र क्षयोपशम ज्ञान के आधार पर ही नहीं उनकी दैनिक चर्या और जीवन के आधार पर भी दिये जाने चाहिए इससे कम या ज्यादा क्षयोपशम वाले सभी बच्चों का उत्साहवर्धन होगा।

(15) पाठशाला में आने वाली समस्यायें → आज समाज में मुख्यता विद्वान पंचकल्याणक बड़े बड़े सांस्कृतिक आयोजन के लिए जो धनराशि बहुत शीघ्र उपलब्ध हो जाती है किन्तु पाठशाला के विकास के लिए उतने अनुपात में धनराशि नहीं आती या आती ही नहीं, जबकि पाठशाला धर्म प्रभावना की मुख्य आधारशिला है पढ़ाने वाले अध्यापक भी या तो स्वयं आर्थिक स्थिति से कमजोर होते हैं या सम्पन्न भी होते हैं तो वो यशआदि के लिए अन्य जगह तो बोली आदि लेते हैं

Scanned with CamScanner

किन्तु स्वयं पाठशाला के खर्च के लिए दूसरों पर आश्रित रहते हैं, बड़े लोगों के शिविर आदि में भी छोटे छोटे बच्चों को पाठशाला की समुचित व्यवस्था नहीं होती है।
आजपाठशाला मे बच्चे नहीं आने का कारण उनकी लौकिक शिक्षा है, या फिर माहौल खराब होने के कारण भी दूर से आने वाले बच्चे अपहरण आदि की घटनाएं आये दिन होने के कारण माता पिता पाठशाला नहीं भेजते हैं।

(16) पाठशाला की नियमितता → पाठशाला प्रतीदिन लगनी चाहिए स्कूल के पेपर अनुसार पाठशाला मे बच्चों कीसंख्या कम या ज्यादा होतीरहती है, कम बच्चे होने पर भी पाठशाला अच्छे से लगनी चाहिए चाहे कितने भी बच्चे आये प्रायः देखा जाता है कि दो या चार बच्चे आने पर अध्यापक अच्छे से पाठशाला नहीं लगाते या छुट्टी कर देते हैं, फलस्वरूप धीरे धीरे पाठशाला बन्द होजाती है।
अध्यापक भी पाठशाला मे एक से अधिक होने चाहिए अक्सर देखा जाता है कि अध्यापक को अपने लौकिक कार्यों या रोग आदि के कारण पाठशाला की छुट्टी करनी पड़ती है जिससे बीच में ही प्रवाह रुक जाता है बच्चे पुनः पाठशाला से

Scanned with CamScanner

जुड़ नहीं पाते अतः एक अधिक अध्यापक एक पाठशाला में होने चाहिए।

निष्कर्ष → इस प्रकार पाठशाला में आने वाली समस्याओं का हल करते हुए प्राचीन तथा आधुनिक दोनों प्रकार की पद्धति को यथा-योग्य अपनाते हुए हृदय में पवित्र भावना रखते हुए सुयोग्य विद्वानों द्वारा पूरी ईमानदारी से मात्र जिनशासन प्रभावना हेतु चलाई जाये तो अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

— o —

Scanned with CamScanner